CHAPTER 21

कुटज

PAGE 168, प्रश्न और अभ्यास

12:1:21:प्रश्न और अभ्यास :1

कुटज को 'गाढ़े का साथी' क्यों कहा गया है?

उत्तर ; इस पाठ में लेखक ने कुटज की विशेषता बताते हुए ये कहा है की कुटज मुश्किल हालत में भी साथ रहता है । उन्होंने इसका वर्णन इस प्रकार किया है की जब कालिदास ने अपनी एक रचना लिखा है कि जब रामगिरी पर्वत विधमान बादलों को यक्ष के द्वारा एक निवेदन भेजा, तो वहाँ के मुश्किल हालतों में भी यक्ष को एक कुटज का वृक्ष दिखा। वह वृक्ष ऐसी जगह पर, खड़ा था जहाँ कुछ उग और पनप नहीं सकता। यक्ष को ये देख कर बड़ा हैरानी हुई फिर यक्ष ने मेघ को कुटज के फूल चढ़ाकर प्रसन्न किया। इसलिए कुटज को 'गाढे के साथी' कहा जाना उचित है।

12:1:21:प्रश्न और अभ्यास :2

'नाम' क्यों बड़ा है? लेखक के विचार अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : किसी भी इंसान के जीवन में उसके नाम का बहुत महत्व होता है। क्युकी उसका नाम ही उस मनुष्य की पहचान बनती है। अगर कोई आपको संबोधित करता है तो वह आप का नाम पुकारता है जिससे हमें पता चलता है की ये संबोधन हमारे लिए है। अगर आप के सामने किसी के रूप, आकार आदि का संक्षिप्त वर्णन भी करे तब भी हम उस इंसान को नहीं पहचान पाते जब तक उसके नाम का वर्णन ना हो।कभी - कभी ऐसा होता है की रास्ते चलते कोई व्यक्ति आप को अचानक मिल जाता है तो हम उसे उसके चेहरे से पहचाना तो लेते है लेकिन जब तक उसका नाम याद नहीं आता तब तक आदमी की पहचान अधूरी लगती है। समाज में लोग हमें हमारे नाम से जानते हैं।नाम समाज द्वारा स्वीकृत किया हुआ है। इसलिए, ये कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति कितना भी सुंदर क्यों ना हो , अगर उसका नाम नहीं है, तो उसकी पहचान अधूरी रहती है । यहाँ तक की हमारे जीवन में और समाज में हम ने हर वस्तु और अन्य प्राणियों को भी

पहचानने के लिए एक नाम का प्रोयोग करते है ।उसके नाम के प्रयोग वश ही हमरे अंदर उस प्राणी और वस्तु की छवि बन जाती है । हमारे समाज में हर व्यक्ति और वस्तुओं के नाम उसके धर्म ,जाती और आकार के आधार पर दिया जाता है ।

12:1:21:प्रश्न और अभ्यास :3

'कुट', 'कुटज' और 'कुटनी' शब्दों का विश्लेषण कर उनमें आपसी संबंध स्थापित कीजिए।

उत्तर : अपने इस पाठ में हजारी प्रसाद जी ने जिस विषय को हमारे सामने प्रकाशित करने की कोशिश की है । हजारी प्रसाद जी के अनुसार, 'कुट' शब्द के दो अर्थ होते हैं: एक 'घर' और दूसरा 'घड़ा'। इसलिए हजारी प्रसाद जी के आधार 'कुटज' शब्द का अर्थ है: घड़े से उत्पन्न होने वाला।कुटज अगस्त्य मुनि को भी कहा है। विद्‌वानों का कहना था की मुनि घड़े से उत्पन्न हुए थे। अब 'कुट' शब्द के दुसरे अर्थ की तरफ चलते हैं। हजारी प्रसाद ने कुट शब्द का एक अर्थ बताया है घर तो घर में रह रही कोई दुष्ट स्त्री ‘कुटनी ‘हुई ।

देखा जाये तो कई बिंदु पर, ये शब्द परस्पर जुड़े होते हैं और उनके अन्दर समानतायें होती हैं।

12:1:21:प्रश्न और अभ्यास :4

'कुटज किस प्रकार अपनी अपराजेय जीवनी-शक्ति की घोषणा करता है?

उत्तर: इस पाठ में ये दर्शाया गया है कि कुटज का पेड़ एक ऐसे माहौल में जिंदा खड़ा हैं, जहां किसी भी पेड़ - पौधे का जी पाना असंभव है वहाँ घास तक पैदा नहीं होती है। कुटज वहाँ भी अपने आप को जीवित रखे हुए है ।सिर्फ जिन्दा ही नहीं इसके साथ फलता-फूलता भी है वह पथरीले पर्वतों में भी अपने लिए जल खोज लेता है ।वह ऐसे निर्जन स्थानों पर अकेले जीवित रह कर अपने अपराजय होने की जीवन शक्ति का घोषणा करता है।

12:1:21:प्रश्न और अभ्यास :5

'कुटज' हम सभी को क्या उपदेश देता है? टिप्पणी कीजिए।

उत्तर : 'कुटज' कठिन परिस्थितियों में भी हर यातनाओं को झेलते हुए भी जिन्दा रहता है । वह निर्जन पड़ी जमीं से भी

अपने लिए जल और लवण खोज लेता है और वहाँ भी फलता - फूलता है । कुटज से हमें यही उपदेश मिलता है कि चाहे आप के जीवन में कितनी भी कठिन परिस्थितिया आये आप को अपना धेर्य और साहस नहीं खोना चाहिए, हमें धैर्य रखना चाहिए और कठिन परिस्थितियों में अपनी मेहनत और ताकत से काम करना चाहिए।

12:1:21:प्रश्न और अभ्यास :6

कुटज के जीवन से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर ; कुटज के जीवन से हमें कई प्रकार की सीख मिलती है :

(क) हमें धैर्य से काम लेना चाहिए और हिम्मत कभी नहीं हारनी चाहिए ।

(ख) विकट परिस्थितियों में भी हमें अपने सामंजस्य को बनाये रखना चाहिए और धीरजपूर्वक कार्य करना चाहिए ।

(ग) अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए ।

(घ) हमें खुद पर विस्वास रखना रखना चाहिए और किसी भी परिस्थिति में लाचार नहीं होना चाहिए।

(ङ) सदा सर उठाकर जीना चाहिए ।

(च) मुसीबत के समय बिलकुल घबराना नहीं चाहिए।

(छ) हमें हमारी मेहनत और ताकत से जो प्राप्त होता है उसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

12:1:21:प्रश्न और अभ्यास :7

कुटज क्या केवल जी रहा है- लेखक ने यह प्रश्न उठाकर किन मानवीय कमज़ोरियों पर टिप्पणी की है?

उत्तर - लेखक मानवीय कमजोरी पर हमला करके इस सवाल को उठाता है। लेखक के अनुसार, कुटज का वृक्ष न केवल जीतता है, बल्कि यह साबित करता है कि अगर मनुष्य में जीने की इच्छा है, तो वह किसी भी तरह की परिस्थितियों से आसानी से बाहर निकल सकता है। वह अपने आत्मसम्मान और जीने में गर्व दोनों की रक्षा करता है। वह किसी से मदद

नहीं मांगता बल्कि हिम्मत से रहता है। यह प्रश्न उन मनुष्यों पर लक्षित करके किया जाता है जो जीवन की थोड़ी सी कठिनाइयों के आगे झुक जाते हैं। उनके पास जीने के लिए कारण नहीं है बल्कि बस जीने के लिए जीना है। ऐसे लोगों में हिम्मत, जीने की ललक नहीं होती। ऐसे लोगों के लिए यह कहा जाता है कि वे मन के हारे हुए हैं।

12:1:21:प्रश्न और अभ्यास :8

लेखक क्यों मानता है कि स्वार्थ से भी बढ़कर जिजीविषा से भी प्रचंड कोई न कोई शक्ति अवश्य है ? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर - मनुष्य को उसका स्वार्थ हमेशा उसे गलत रास्तों पर ही ले जाता है। मनुष्य ने अपने स्वार्थ वश ही गगनचुंबी इमारतों का निर्माण किया है। बड़े पुल बनाए गए हैं। हवा में उड़ने वाला एक जहाज बनाया है। हमारे जीवन में स्वार्थ की कोई सीमा नहीं है। मनुष्य बस अपने जीवन को सरल बनाने के लिए ही अन्य उपकरणों का आविष्कार करता है ।उसे दुनिया में अन्य प्राणियों की कोई भी चिंता नहीं रहती है ।

लेकिन यह केवल स्वार्थ और जिजीविषा है जो हमें गलत रास्ते पर ले जाती है। इन दोनों की वजह से ही हम खुद को महत्व देते हैं। और समाज को भूल जाते है, लेकिन लेखक की नजरों में स्वार्थ और जिजविषा से भी बढ़ कर एक शक्ति मौजूद है जो हर जातियों का उतना ही कल्याण करती हैं। कल्याण की भावना उसे महान बनाती है। यह ऐसी उग्रता है जो मनुष्य अपने अहंकार के परे निस्वार्थ और मजबूत बनाती है।

12:1:21:प्रश्न और अभ्यास :9

'कुटज' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए कि 'दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं।'

उत्तर - लेखक के अनुसार, दु: ख और सुख वास्तव हमारे जीवन का एक वास्तविक अंग होते है । अगर किसी व्यक्ति का दिमाग उसके नियंत्रण में हो और उसकी जरूरते सिमित हो वह स्वाथ्य प्रतीत होता हो ,उसे किसी भी प्रकार का कोई विकार ना हो तो हमारे समाज में में उसे खुश कहा जाता है। क्योंकि कोई भी उसकी मर्जी के बिना उसे परेशान नहीं कर

सकता। और उस व्यक्ति को हमेशा दुःख का सामना करना पड़ता है जो हमेशा दूसरों के कहने पर चलता है या जिसका मन स्वयं के बजाय दूसरों के हाथों में है। वह अपनी इच्छा के अनुसार व्यवहार करता है। दरअसल उसका दुःख उसके मन की भ्यान्ति होती है वह ख़ुशी अपने मन में पैदा ही नहीं करना चाहता वह हमेशा दुसरो के हाथों कठपुतली बन कर रह जाता है ।और अपने को दुखी महसूस करता है ।

12:1:21:प्रश्न और अभ्यास :10

निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

(क) 'कभी-कभी जो लोग ऊपर से बेहया दिखते हैं, उनकी जड़ें काफ़ी गहरी पैठी रहती हैं। ये भी पाषाण की छाती फाड़कर न जाने किस अतर गह्वर से अपना भोग्य खींच लाते हैं।'

उत्तर -

(क) प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हजारी प्रसाद द्वेदी द्वारा रचित निबंध कुटज से लिया गया है । इसमें लेखक कुटज की विशेषता बताते हैं दूसरी ओर वह ऐसे लोगों की और संकेत करता है । जो स्वभाव से बेशर्म होते हैं

लेकिन ये बेशर्मी उसकी विकट परिस्थितियों से लड़ने का परिणाम होती है ।

<u>व्याख्या </u>: इन पंक्तियों के माध्यम से लेखक कुटज और उन लोगों के बारे में बात करता है जो निराधार प्रतीत होते हैं। लेखक कहता है कि कुटज अपने सिर के साथ एक ऐसे वातावरण में खड़ा है जहां अच्छा और अच्छा आश्चर्य होता है। यह पहाड़ों की चट्टानों पर पाया जा सकता है। इसके अलावा, वे मौजूदा जल स्रोतों से अपने लिए पानी उपलब्ध कराते हैं। लोगों को इस तरह खड़े होने के उनके स्वभाव को भलाई का उदाहरण क्यों मानना चाहिए। मनोवृत्ति उन प्रतिकूलताओं से लड़ने का परिणाम है जो उनके स्वभाव में देखी जाती हैं। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो जीवन की हर परिस्थिति से लड़ते हैं। लोग इस प्रकृति को बेहोशी का सबूत मानते हैं। यह प्रकृति उनकी रक्षा करती है और उन्हें दृढ़ रहने में मदद करती है। ऐसे लोग अपना रास्ता खुद ढूंढ लेते हैं।

(ख) 'रूप व्यक्ति-सत्य है, नाम समाज-सत्य। नाम उस पद को कहते हैं जिस पर समाज की मुहर लगी होती है। आधुनिक शिक्षित लोग जिसे 'सोशल सैक्शन' कहा करते हैं।

मेरा मन नाम के लिए व्याकुल है, समाज द्वारा स्वीकृत, इतिहास द्वारा प्रमाणित, समष्टि-मानव की चित्त-गंगा में स्नात!'

(ख) <u>प्रसंग</u> : प्रस्तुत पंक्तियाँ हजारी प्रसाद द्वेदी द्वारा रचित निबंध कुटज से लिया गया है । इसमें लेखक कुटज की विशेषता बताते हैं

<u>व्याख्या :</u> इन पंक्तियों में, लेखक नाम की विशेषता का वर्णन करता है। जीवन में नाम का बहुत अधिक महत्व है। एक व्यक्ति की पहचान उसके नाम से होती है। यदि किसी को रंग, आकार के बारे में बताया गया है, लेकिन हम इसे पहचान नहीं पाएंगे। जब तक इसका कोई नाम नहीं है। नाम ही इंसान की पहचान है। गौर कीजिए कि हर जीव और वास्तु के लिए एक नाम दिया गया है। यह नाम इसलिए दिया गया है क्योंकि इसका अपना अस्तित्व है, इसे पहचानना आसान होना चाहिए। नाम, रूप, गुण, दोष, जाति आदि के आधार पर दिया जाता है। यही कारण है कि हम उसके नाम के बारे में जानते हैं और यह भी समझते हैं कि कौन सा व्यक्तित्व बड़ा है और कौन सा छोटा है। लेखक कहता है कि मेरे मन को नाम का अर्थ मिल सकता

है। मैं इसके लिए व्याकुल हो रहा हूं। यानी जब इसे समाज ने स्वीकार कर लिया, तो इसे लोगों के दिल में कैसे जगह मिली।

(ग) 'रूप की तो बात ही क्या है! बलिहारी है इस मादक शोभा की। चारों ओर कुपित यमराज के दारुण निःश्वास के समान धधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रुद्ध अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है।'

(ग) प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हजारी प्रसाद द्वेदी द्वारा रचित निबंध कुटज से लिया गया है । इसमें लेखक कुटज की विशेषता बताते हैं ।

व्याख्या : लेखक प्रस्तुत पंक्तियों में उनकी सुंदरता के बारे में बात करता है। उनका कहना है कि कुटज देखने में बहुत सुंदर है। यदि आप वातावरण को देखते हैं, तो चारों ओर भयानक गर्मी है। ऐसा लगता है जैसे यमराज सांस ले रहे हों। यह बहुत गर्म है इसके बाद भी यह झुलसा नहीं है। यह हरियाली से आच्छादित है। इसके साथ ही यह फलदार भी

हुआ है। यह इस तरह के पत्थरों के बीच से अपनी जड़ों के लिए रास्ता बनाता है। सूत्र खोजते हैं मुझे इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि मैं पत्थर के शैतान व्यक्तियों की तुलना में लेखक हूं, इसलिए उनका कहना है कि कुटज अपने जीवन के लिए खरीद की स्थिति से भी लड़ता है और सर उठा रहता है।

(घ) हृदयेनापराजितः! कितना विशाल वह हृदय होगा जो सुख से, दुख से, प्रिय से, अप्रिय से विचलति न होता होगा! कुटज को देखकर रोमांच हो आता है। कहाँ से मिलती है यह अकुतोभया वृत्ति, अपराजित स्वभाव, अविचल जीवन दृष्टि!'

(घ) <u>प्रसंग</u> : प्रस्तुत पंक्तियाँ हजारी प्रसाद द्वेदी द्वारा रचित निबंध कुटज से लिया गया है । इसमें लेखक कुटज की विशेषता बताते हैं ।

<u>व्याख्या :</u> लेखक प्रस्तुत पंक्तियों में कुटज की सुंदरता के बारे में बात करता है। उनका कहना है कि कुटज देखने में बहुत सुंदर है। कुटज 'हम सभी को सिखाते हैं कि हमें सबसे कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं माननी चाहिए। हमें धैर्यवान और विकट परिस्थितियों में रहना चाहिए। मुझे अपनी मेहनत और ताकत से काम करना होगा। अगर हम

लगातार कोशिश करते हैं, तो हम इन महत्वपूर्ण परिस्थितियों को हमारे सामने घुटने टेकने के लिए मजबूर करते हैं। निष्पक्ष स्थिति में गुजरता हुआ व्यक्ति सोने की तरह चमकता है। जो भयानक परिस्थितियों से ग्रस्त है, फिर उसे कोई नहीं गिरा सकता।